मुक्ति सोपान

(अच्छे-बुरे भावों का फल)

यह मात्र एक खेल (GAME) नहीं है अपितु हृदय तक पहुँचने वाले कर्म फलों का प्रत्यक्ष लेखा-जोखा है। समीचीन संस्कारों की अमिट छाप डालने वाला यंत्र है।

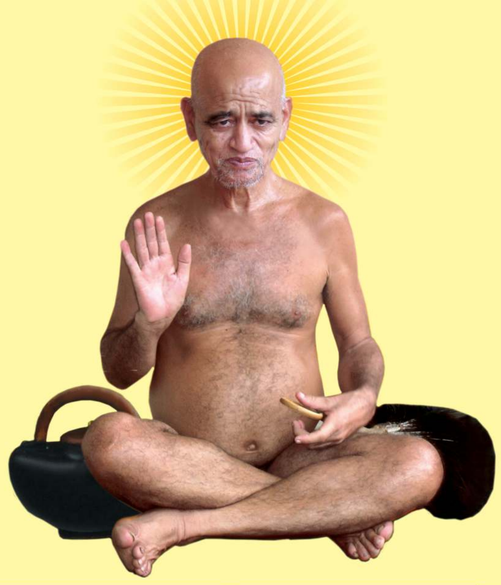

मोक्ष 100	समवसरण 99	भामण्डल 98	सर्वार्थसिध्दी 97	क्षपक श्रेणी 96	तीव्र क्रोधी 95	महाव्रत 94	मुनिदिक्षा 93	अहमिन्द्र देवों का निवास नव ग्रैवेयक 92	तीर्थंकर 91
सम्यक् ज्ञानी 81	उपाध्याय परमेष्ठी 82	एकांत, विनय, संशय, विपरीत,अज्ञान मिथ्यात्व 83	जिनप्रतिमा 84	जय जिनेंद्र 85	सोलह स्वर्ग 86	बारह तप 87	मंत्र जाप 88	गुणस्थान 89	प्रात:जागना 90
रात्री भोजन 80	जिनाभिषेक 79	बाईस परीषह 78	सदाचरण 77	कल्पवृक्ष 76	संयम 75	74	ध्यान 73	वैयावृत्य 72	विनय 71
मोहनीय कर्म 61	स्वाध्यायी 62	वृद्ध सेवा 63	ह्रीं 64	तीर्थ वंदना 65	षट्खण्डागम 66	जल चंदन 67	जिनपूजा 68	आरती 69	पुष्प क्षेपण 70
नाम कर्म 60	चतुर्गति भ्रमण 59	पाठशाला 58	क्रूरता 57	रत्नत्रय 56	जैन ध्वज 55	मानसिक शान्ति 54	हिंसा झूठ चोरी कुशील परिग्रह पाँच पाप 53	शराब पीना 52	मांसभक्षी 51
कोढी 41	निरोगी काया 42	मान कषाय 43	कलश 44	वैराग्य 45	धर्मात्मा 46	मानस्तंभ 47	48	वैमानिक देव अथवा भोगभूमि 49	सुमेरु पर्वत 50
गर्भपात 40	जीवरक्षा 39	परप्रशंसा 38	लोभी 37	उच्चगोत्र 36	सोलह स्वप्न 35	पुद्गल द्रव्य 34	सत्संगती 33	आठ मद 32	अगाहिज 31
चोरी पाप 21	बूंद में जीव 22	औषधदान 23	स्याद्वाद 24	अनेकान्त 25	शहद खाना 26	शिकार व्यसन 27	काल द्रव्य 28	स्वस्तिक 29	आहार दान 30
हिंसा पाप 20	वेदनीय कर्म 19	तिर्यंच गति 18	परोपकारी 17	साँप 16	आयुकर्म 15	दुर्दशा 14	घण्टा 13	कमल 12	धर्म द्रव्य 11
नित्यनिगोद 1	इतर निगोद 2	एकेंद्रिय 3	दो इन्द्रिय 4	तीन इन्द्रिय 5	चौइन्द्रिय 6	पंचेन्द्रिय 7	ज्योतिषी देव 8	दयालू 9	नरक 10

सोचें समझें और करें, पाप छोड़कर पुण्य करें।
नहीं निगोद में पड़ना है, मुक्ति पथ पर चलना है॥

विशेष : कृपया इसे ऊँचे पाटे/आसन आदि पर रखकर खेलें।

अच्छा काम करने के लिये धन की कम, अच्छे हृदय और दृढ़ संकल्प की अधिक आवश्यकता पड़ती है।

प्रकाशक : धर्मोदय परीक्षा बोर्ड, सागर (म.प्र.) 094249 51771